

बौद्ध धर्म एवं दर्शन पर प्रकाश डालें —

भूमिका :

बौद्ध धर्म भारत की एक प्रमुख धार्मिक एवं दार्शनिक परंपरा है, जिसकी उत्पत्ति छठी शताब्दी ई.पू. में हुई। इसके प्रवर्तक गौतम बुद्ध थे, जिन्होंने तत्कालीन वैदिक कर्मकांड और जाति व्यवस्था से असंतुष्ट होकर मानव जीवन के दुखों का समाधान खोजने का प्रयास किया। उनका लक्ष्य था — मानव को “दुःख से मुक्ति” का व्यावहारिक मार्ग दिखाना।

---

१. बौद्ध धर्म की मुख्य शिक्षाएँ

बुद्ध का उपदेश कर्म, करुणा, और मध्यम मार्ग पर आधारित था। उन्होंने जीवन के चार मूलभूत सत्यों और अष्टांगिक मार्ग की व्याख्या की।

(क) चार आर्य सत्य (Four Noble Truths):

1. दुःख – संसार में सब कुछ दुःखमय है।
2. दुःख समुदय – यह दुःख तृष्णा (इच्छा) के कारण उत्पन्न होता है।
3. दुःख निरोध – तृष्णा के निरोध से दुःख का अंत संभव है।
4. दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा – दुःख से मुक्ति का मार्ग अष्टांगिक मार्ग है।

(ख) अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path):

1. सम्यक दृष्टि (Right View)
2. सम्यक संकल्प (Right Resolve)
3. सम्यक वाक (Right Speech)
4. सम्यक कर्मांत (Right Action)

5. सम्यक आजीव (Right Livelihood)

6. सम्यक प्रयास (Right Effort)

7. सम्यक स्मृति (Right Mindfulness)

8. सम्यक समाधि (Right Concentration)

---

२. बौद्ध दर्शन की प्रमुख अवधारणाएँ

बौद्ध दर्शन भारतीय दर्शन की छह आस्तिक और तीन नास्तिक परंपराओं में नास्तिक दर्शन के अंतर्गत आता है, क्योंकि यह वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार नहीं करता।

(क) अनात्मवाद (Doctrine of No-Self):

बुद्ध ने आत्मा के अस्तित्व को नकारते हुए कहा कि व्यक्ति “पंच स्कंध” (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान) का समूह है। इन स्कंधों के विलय से व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

(ख) क्षणिकवाद (Theory of Momentariness):

संसार की प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर है। कुछ भी स्थायी नहीं है — सब कुछ परिवर्तनशील है।

(ग) प्रतीत्यसमुत्पाद (Doctrine of Dependent Origination):

यह सिद्धांत बताता है कि संसार में सब कुछ परस्पर निर्भर कारणों से उत्पन्न होता है — “यह है तो वह है, यह नहीं तो वह नहीं।” इससे बौद्ध दर्शन का कारण-कार्य संबंध अत्यंत वैज्ञानिक बनता है।

---

३. बौद्ध दर्शन की शाखाएँ

बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म दो प्रमुख शाखाओं में विभाजित हुआ:

1. हीनयान (Theravāda) – व्यक्तिगत मोक्ष पर बल देता है।

2. महायान (Mahayāna) – करुणा, बोधिसत्व और सर्वजन हिताय के विचार पर आधारित है।

बाद में इससे वज्रयान जैसी शाखा भी विकसित हुई, जिसमें तांत्रिक तत्वों का समावेश हुआ।

---

४. बौद्ध दर्शन का प्रभाव

बौद्ध दर्शन ने भारतीय समाज में अहिंसा, समानता और तर्कशीलता का प्रसार किया।

इसने वैदिक कर्मकांड और ब्राह्मणवाद को चुनौती दी।

बौद्ध ग्रंथों (त्रिपिटक) ने भारतीय भाषाओं, विशेषकर पाली और संस्कृत के विकास में योगदान दिया।

विदेशों में (श्रीलंका, म्यांमार, चीन, जापान, तिब्बत आदि) यह एशिया की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बन गया।

---

५. निष्कर्ष

बौद्ध धर्म केवल एक धर्म नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन है जो मानव को मध्यम मार्ग, करुणा, और आत्मसंयम की ओर प्रेरित करता है। बुद्ध का यह वचन —

> “अप्प दीपो भव” (स्वयं अपने दीपक बनो)

आज भी मानवता को आत्मजागृति और नैतिक जीवन का संदेश देता है।